पाठ 3

आधुनिक विश्व - I

14 वीं शताब्दी के बाद से यूरोप को सांस्कृतिक और बौधिक जीवन में कई गंभीर परिवर्तनों से आधुनिक काल में प्रवेश करने में मदद मिली । यह पुनर्जागरण था, इसने सामाजिक और राजनितिक क्षेत्र में चिंतन और तर्क को बढ़ावा दिया तथा जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया । यूरोप के पुनर्जागरण के दौरान हुए परिवर्तनों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया । ये परिवर्तन सामंती प्रणाली के विघटन के साथ शुरू हुए ।

सामंतवाद के पतन के कारण :- मध्यकालीन युग के दौरान सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक सामंतवाद था । जो कई शताब्दियों तक फलता फूलता रहा लेकिन मध्यम वर्ग के साथ ही इसका पतग शुरू हो गया था । शक्तिशाली राज्यों के उदय तथा समाजवादी स्वामियों में आपस में युद्ध होने से इसका पतन हुआ । नये नगरों के उदय होने तथा व्यापार के पुनरुद्वार से सामंतवाद का विघटन हुआ । ये नगर उत्पादन के केन्द्र थे, तथा इन पर निर्वाचित प्रतिनिधियों का नियंत्रण था । व सामंती प्रतिबन्धों से मुक्त थे । धीरे-धीरे शक्तिशाली व्यापारी वर्ग का उदय होने के साथ ही इन्होंने सामंतो स्वामियों की स्थिति को कमजोर करने के लिए शक्तिशाली सम्राटों को समर्थन देना शुरू कर दिया जिससे सामंती सरंचना कमजोर हो गई और इससे सामंती वर्ग का पतन हुआ ।

नये विचारों के आगमन से नई चेतना का सृजन हुआ । इससे पुनर्जागरण नामक नये आन्दोलन को जन्म दिया ।

पुनर्जागरण :- इन आंदोलनों से लोगों के सांस्कृतिक, बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन में कई परिवर्तन आये । इस अवधि में शहरीकरण, परिवहन के तीव्र साधन और संचार, लोकतान्त्रिक प्रणाली और समानता के आधार पर समान कानून लक्षणित किया गया हैं ।

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है 'पुनर्जन्म' । यह इटली में 14वीं सदी के आस पास प्रारम्भ हुआ । उस समय इटली छोटे शहर व राज्यों में विभाजित था । उनमे से कई शहर व राज्य प्राचीन रोमन इमारतों के भग्नावशेषों पर बनाये गए थे । इलावती शहरों की भौगोलिक स्थिति ने उन्हें महान व्यापार और बौद्धिक केन्द्र बना दिया था । कई वाणिज्यिक और वित्तीय तकनीकें विकसित की गई । कई नई वस्तुओं ने यूरोपवासियों के जीवन को समृद्ध बनाया व अधिक लाभ व् उत्पादन की तकनीकें विकसित की । चित्रकला मानवतावाद की भावना को कला और साहित्य के क्षेत्र में भी अभिव्यक्ति मिली । चित्रकारों ने शरीर संरचना और मानव शरीर के अनुपात का अध्ययन किया । पुनर्जागरण के प्रथम महान मूर्तिकार "डोनालटो" थे जिन्होंने डेविड की मूर्ति बनाई थी । लोगों ने ख़ुद को धार्मिक प्रतिबन्धों से मुक्त करना शुरू कर दिया ।

आधुनिक यूरोपीय भाषाओं इतावली स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी आदि को साहित्य की भाषा के रूप में परिलक्षित किया गया । अब लेखक लैटिन के बजाय स्थानीय भाषाओं में कविता नाटक गध्य आदि का उपयोग करने लगे । पुनर्जागरण के उतरान्ध में यूरोप के इतिहास में दो विकास हुए पहला प्रोटेस्टेंट सुधार

था । जो इसाई धर्म में विभाजन का परिणाम दूसरे रोमन कैंथोलिक चर्च के भीतर से सम्बन्धित सुधार था । ये सुधार सामाजिक - धार्मिक और राजनितिक आन्दोलन का एक हिस्सा था । जिससे आधुनिक विश्व की उत्पति हुई ।

धर्म सुधार :- 1517 ई. में मार्टिन लूथर नामक एक जर्मन पुजारी थे । इन्होंने पहले कैथोलिक चर्च के अधिकारियों को चुनौती दी । उनके अनुसार, बाइबिल धार्मिक अधिकार का एक मात्र स्त्रोत था । उनका मानना था कि चर्च पर अंधविश्वास करने के बजाय यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है । लूथर के विचारों से पश्चिम में प्रोटेस्टेंट धर्म की शुरुआत की और इसाई जगत को दो भागों में बांट दिया, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक ।

कैथोलिक चर्च में एक सुधार आन्दोलन जिसे प्रति सुधार आन्दोलन कहा जाता हैं । इसका मुख्य उद्देश्य भ्रष्टाचार को कम करने और कैथोलिक चर्च को सुधारना और सुद्रढ़ करना था । इसकी शुरुआत स्पेन में हुई जहा इग्नेशियन लॉयल ने “यीशु का समाज” की स्थापना की, जिसने पवित्रता, मिशनरी कार्य दूसरों की मदद और ईश्वर की सेवा पर बल दिया ।

विज्ञान विकास :- पुनर्जागरण से विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति आ गई । पुनर्जागरण के विचारको ने अवलोकन और प्रयोग के द्वारा ज्ञान प्राप्ति को समझा । माईकल सेरवाटसन ने रक्त परिसचरण की खोज की व विलियम हार्वे ने ह्रदय द्वारा रक्त को शुद्ध करने व इसके परिसचरण को समझाया । इसकी उपलब्धियाँ खगोल विज्ञान के क्षेत्र में भी हुई । कोपनिरक्स केप्लर और गैलिलियो महान खगोलशास्त्री जिन्होंने सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों और चक्कर काटती हैं । आईजैक न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त दिया । अपने द्वारा बनाई दूरबीन से गैलिलियो ने ब्रहस्पति के चंद्रमाओं की खोज की | शांति के छल्ले और सूर्य को देखा उसने कोपनिकर्स की खोजों की पुष्टि की ।

नई भूमि की खोज :- नये व्यापार मार्गो की खोज ने दुनिया के इतिहास को बदल दिया । भौगोलिक खोजों से पहले यूरोपीय दुनिया पूर्व से मसाले, कपास, जवाहरात, रेशम आदि वस्तुए मंगवाते थे | जिसकी आपूर्ति के लिए उन्हें अरबी और इस्लामी प्रदेशों के बीच यात्रा करनी पड़ती थी । यह सुविधाजनक न होकर अनिश्चितताओं से भरा था । पूर्व एशिया के लिए एक सीधे समुंद्री मार्ग की खोज से व्यापार की क्षमता बढ़ी । नये क्षेत्रों के लोगों को इसाई धर्म में परिवर्तन करना खोजकर्ताओं का एक और मकसद था । इसके आलावा साहसी लोगों को नई भूमि की खोज के द्वारा प्रसिद्धी मिली जैसे -वास्को डिगामा द्वारा भारत की खोज और कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज के बारे में सुना होगा ।

एक सबसे प्रसिद्ध पुर्तगाली राजा हेनरी जो हेनरी नेविग्रटर के रूप में भी जाना जाता है । इन खोजों के द्वारा तकनीकी आधार कम्पास, खगोलीय सारणी और नक्शे बनाने की कला का अविष्कार हुआ । इन यात्राओं से विश्व के विभिन्न भागों में जैसे -अफ्रीका, अमेरिका और एशिया में व्यापारिक चौकी बनाने और औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ । कई नई वस्तुएँ व्यापार में शामिल की गई । व्यापार पद्धतियों और समुंद्री मार्गो की खोज ने यूरोपीय व्यापारियों को विशाल धन जमा करने के लिए और नई

मशीनों के विकास में निवेश के लिए मदद की । यह औधोगिक क्रांति थी जिसने उन्हें और अधिक शक्तिशाली और अमीर बना दिया ।

औधोगिक क्रांति :- औद्योगिक क्रांति 1750 में इग्लैंड में शुरू हुई । यह संभव इसलिए हो सका क्योंकि अंग्रेज व्यापारियों ने विदेशी व्यापार के माध्यम से भारी धन एकत्रित किया था । और उसके उपनिवेश कच्चे माल की आपूर्ति के लिए सुरक्षित थे । उपनिवेश तैयार माल के लिए संभावित बाज़ार के रूप में देखे जाते थे । इसके अलावा इग्लैड में कोयला और लोहा उद्योगों को चलाने के लिए आवश्यक संसाधनों के विशाल भंडार थे । इस प्रकार पूंजीपतियों के लिए नई मशीनों के विकास में निवेश करने और लाभ कमाने के उदेश्य से उत्पादन को गति मिली । अब मशीनों ने मनुष्य और पशुओं को उत्पादन के कार्य से हटा दिया । नई मशीनों से उत्पादन में सुधार हुआ । पर इसने समाज को दो भागों में बाँट दिया । पूजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग ।

गौरवपूर्ण क्रांति :- 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति इंग्लैंड में हुई और अन्य दुनिया के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी क्योंकि बिना खून बहाए इसे सफलता प्राप्त हुई । स्टुअर्ट राजा जेम्स द्वितीय ने अपने देशवासियों का लोकप्रिय समर्थन खो दिया था । यह उसके अपने लोगों के प्रति कठोर रवैया के कारण हुआ था । एक महंगी स्थाई सेना का निर्माण, सरकार में रोमन कैथोलिक लोगों के रोजगार में वृद्धि ने लोगों को गुस्सा दिलाया । वे राजा जेम्स द्वतीय को सिहांसन से हटाना चाहते थे । और उसकी बेटी मेरी दितीय को सिहांसन पर बिठाना चाहते थे । इससे पता चलता है कि निरकुंश शासन को बदल दिया गया और एक संवैधानिक सरकार की स्थापना हुई । संसद को सम्राट बदलने की शक्ति थी ।

आजादी के लिए अमेरिकी युद्ध :- 16 वीं शताब्दी के आसपास इंग्लैंड में धार्मिक उत्पीड़न की वजह से यूरोपीय अमेरिका में बसे थे । उनमें से कुछ आर्थिक अवसरों से आकर्षित थे । उनमें 13 उपनिवेश थे जो स्थानीय विधान सभाओं द्वारा अपनी समस्याओं का निपटारा करते थे । ब्रिटिश आर्थिक नीति से ब्रिटिश अपने हित में औपनिवेशिक वाणिज्य को विनियमित करने की कोशिश करते थे । और उपनिवेशों को उद्योग स्थापित करने की आज्ञा नही थी और उन्हें लोहा कपड़ा जैसे ब्रिटिश माल खरीदने पड़ते थे । वे केवल इंग्लैंड द्वारा निर्धारित कीमतों पर चीनी, तम्बाकू कपास आदि का निर्यात करते थे । जिससे ब्रिटिश अमेरिकी उपनिवेशकों को विरोध के लिए उकसाया जाता था । 18 वीं सदी तक फ्रांस के साथ और भारत में युद्ध इग्लैंड के लिए महंगे साबित हुए । इन युद्धों को लड़ने के लिए पैसो की जरूरत अमेरिकी उपनिवेशकों से करों के रूप में पूरा किया जाता था । सभी व्यापार लेन- देन पर स्टाम्प अधिनियमों का उपनिवेशों ने मिलकर विरोध किया । दंगों ने औपनिवेशिक बंदरगाहों शहरों को तबाह कर दिया । ब्रिटिश संसद ने 1766 में स्टाम्प अधिनियम को निरस्त कर दिया । हालाँकि संसद ने चाय पर कर जारी रखा । 16 दिसम्बर 1773 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के तीन जहाजों पर से चाय को समुन्द्र में फेक दिया । इस घटना को वोस्टन टी पार्टी के रूप में जाना जाता हैं । संसद ने बोस्टन के बंदरगाह को बंद कर दिया लेकिन अमेरिका की आजादी के लिए युद्ध की शुरुआत हो गई थी । अमेरिकी क्रांति एक संघर्ष था जिससे 13 अमेरिकी उपनिवेशों को ब्रिटेन से आजादी मिली और एक राष्ट्र को जन्म दिया जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका कहा जाता हैं ।

फ़्रांसिसी क्रांति :- 18 वीं सदी में फ़्रांसिसी समाज पूरी तरह सम्राट के पूर्ण अधिकार के साथ सामंती था । ये तीन वर्गों में विभाजित किया गया था पादरी या चर्च, पहला इस्टेट, कुलीन वर्ग या दूसरा इस्टेट । पहले दो स्तर विलासिता और धर्म पर कई विशेषाधिकारों और देश के शासन का आनंद लेते थे | तीसरे स्तर में किसान, आम लोग, शहर के श्रमिकों और मध्यम वर्ग के रूप में आम आदमी तीसरी स्टेट में थे | जो भारी करों के बोझ से तले दबे थे ।

फ्रांस के आंतरिक हालातों ने क्रांति के लिए एक आदर्श मंच बनाया हैं । फ़्रांसिसी क्रांति ने यूरोप की मध्ययुगीन सरंचनाओं का अन्त किया और उदारवाद और राष्ट्रवाद के नये विचारों से फ्रांस में एक पूर्ण परिवर्तन, प्रशासन, सेना, समाज और संस्कृति में परिवर्तन हुआ । यह अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा से प्रभावित था, जिसमें नागरिकों को हर क्षेत्र में समानता दी गई । नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस के तहत एक गणतंत्र बन गया । फ्रांस कांति एक मार्गदर्शक सिद्धान्त स्वतंत्रता, भाईचारा समानता थे। कई प्रबुद्ध विचारकों वाल्टेअर, मानटेस्क्यू और रोसियो जैसे दार्शनिकों के विचार से प्रेरित थे ।

इटली का एकीकरण :- 18 वीं सदी में, इटली कई राज्यों का समुह था । प्रत्येक का अपना स्वयं का सम्राट और परम्परा थी । 1789 की फ्रांसिसी क्रांति ने इटली के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इटली के राजाओं ने खतरे को भापकर यूरोपीय देशों से रिश्ते बनाये जो फ्रांस के विरोधी थे । 1796 से 1814 तक नेपोलियन बोनापार्ट यूरोपियन शक्तियों से हार गया । 1849 के बाद से पाईडमोन्ट सरडिनिया जिसका राजा विक्टर एम्मनुऐल एकीकरण में एक सक्रिय भूमिका निभाई । गैरीबाल्डी ने विद्रोह का नेतृत्व सिसिली और नेपल्स में किया उसने दो राज्यों का प्रभार एम्मनुऐल को सौपकर इटली का राजा बना दिया । बाद में रोम और वेनतिया इतावली राज्यों के संघ में शामिल हो गए । इटली के एकीकरण की प्रक्रिया 1815 में वियना की कांग्रेस के साथ शुरू हुई ।

जर्मनी का एकीकरण :- 1815 में नेपोलियन के हार के बाद कई जर्मन एक स्वत्रंत जर्मनी चाहते थे । जर्मनी 39 छोटे -छोटे राज्यों का संघ था और पर्शिया और आस्ट्रिया के नेतृत्व में था । कैसर विलियम प्रथम प्रधानमंत्री बिस्मार्क को पर्शिया के शासन के अधीन जर्मनी को एकजुट करना चाहता था और आस्ट्रिया और फ्रांस को पूरी तरह से बाहर रखना चाहता था । वह जर्मनी का एकीकरण तत्काल चाहता था इसलिए सेना के आधुनिकरण के साथ यह कार्य प्रारम्भ किया । उसे खून व आयरन की नीति के लिए जाना जाने लगा । 1864 में विस्मार्क ने आस्ट्रिया के साथ डेनमार्क के खिलाफ हाथ मिलाया । फिर आस्ट्रिया को कब्जे में लिया । उसने जर्मन कन्फेडरेशन का गठन किया । नेपोलियन तृतीय को मुआवजा देकर उसे युद्ध से बाहर कर दिया और रूस का समर्थन प्राप्त कर लिया । वह पांच अलग -अलग राष्ट्रों को अपने हाथों में रखता था । दो से मित्रता करता था, तीन को अपने शत्रुओं से लड़ाता रहता था । पर्शिया ने 1871 में फ्रांस पर आक्रमण कर उसे हरा दिया । धीरे - धीरे उसने जर्मनी के छोटे - छोटे राज्यों को मिला लिया । जर्मनी का एकीकरण कैसर विलियम के द्वारा पूरा किया गया । जल्दी ही जर्मनी यूरोप से अग्रणी बन गया और उसने अपने आर्थिक हित को आगे बढ़ाया । दुनिया में जर्मन प्रभाव बढ़ने लगा और वह एक औपनिवेशिक राज्य के रूप में उभरने लगा ।

समाजवादी आन्दोलन और रुसी क्रांति :- औधोगिक क्रांति ने एक असमान समाज की स्थापना की । एक और गरीब और शोषित और बिना अधिकार के लोग थे । और दूसरी तरफ पूंजीपति सभी विशेषाधिकारों का आनन्द उठाते थे । समाजवाद में सबसे ताकतवर और प्रभावशाली विचार कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के द्वारा दिए गये । अपनी पुस्तक दास कैपिटल में मार्क्स ने कहा सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का उदाहरण हैं । 1905 की क्रांति के बाद भी नागरिक अधिकार और लोकतान्त्रिक प्रतिनिधित्व के कारण अशांति जारी रही । 1917 में रूस में एक और क्रांति हुई क्यों कि जार निकोलस (दूसरा) के निरंकुश शासन, मजदूरों और किसानों की बुरी हालत, अमानवीय काम और करों की विशाल राशि के साथ शोषण व राजनीतिक अधिकारों की मनाही थी । समाज के सभी वर्गो के बीच व्यापक असंतोष था । सेना में गोला बारूद व शहरों में भोजन का अभाव था । किसानों को अपनी उपज का उचित दाम नही मिल रहें थे । इस सरकार ने मुद्रास्फीति के कारण रूबल नोटों को लाखों में छापा | जिसके कारण स्थिति जार के हाथ से फिसल गई । यह स्थिति मार्क्स और टाल्सटॉय के लेखों से बिगड़ गई । इसने विशेषकर श्रमिकों को प्रभावित किया । सोवियत संघ की श्रमिकों की परिषद के गहन को फरवरी 1917 में जार द्वारा अपदस्थ कर एक अस्थायी सरकार मैंनशैविक रुसी साम्यवादी पार्टी के नियन्त्रण के तहत स्थापित की गई लेकिन सरकार लोगों की मांगो को पूरा करने में विफल रही । तथा एक अन्य पार्टी बोल्शेविक ने लेनिन की आवश्यकता में सोवियत संघ का आयोजन किया और अक्टूबर 1917 में सरकार की जगह ले ली । ये अक्टूबर क्रांति रुसी क्रांति का अंतिम चरण था । इसने जार के शासन को समाप्त कर दिया और सोवियत संघ का गठन हुआ । जिसने एक नई विश्व व्यवस्था का नेतृत्व किया ।